जय लक्ष्मी-गणेश

श्रीलक्ष्मी-गणेश स्तोत्र

(सानुवाद)

(श्रीगजानन गणेशजी एवं लक्ष्मीजी की कृपा प्राप्ति के लिए व्यापार आदि में उन्नति के लिए श्रीसूक्त आदि
स्तोत्र एवं सरल पाठ विधि सहित भाषानुवाद)

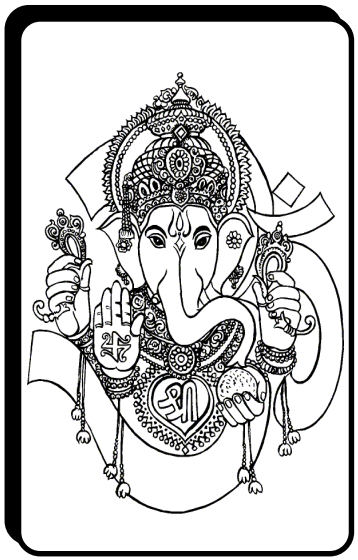

सं० – स्वामी आगमनान्द जी महाराज

प्रकाशक – मानस प्रकाशन, नवगछिया

प्रथम संस्करण संवत् 2068
वैशाख कृष्ण 30 (अमावस्या)
दिनांक 3-5-11ई० मंगलवार
प्रकाशक : मानस प्रकाशन, नवगछिया
प्रकाशनकर्त्ता :
सर्वाधिकार : सम्पादक
पुस्तक मिलन का पता :
1. पुस्तक घर
स्टेट बैंक के सामने, नवगछिया
2. श्रीकृष्णा बुक सेलर
स्टेशन रोड, भागलपुर एवं अन्यत्र
सहयोग राशि – 30/-
Email id:- swamiaagmanand@gmail.com
मुद्रक : सृजन प्रेस, भागलपुर

विषय सूची

क्र० सं०	विषय	पृष्ट
1.	निवेदन	3
2.	सरल विधि	7
3.	संकल नाशन गणेश स्तोत्रम्	10
4.	ऋग्वेदोक्त श्रीसूक्तम्	12
5.	रूद्रयामलोक्त संपुटित श्रीसूक्तम्	14
6.	बीज संपुटित श्रीसूक्तम्	21
7.	श्रीलक्ष्मी-सूक्तम्	28
8.	श्रीधनदा स्तोत्रम	32
9.	श्रीमहालक्ष्मी अष्टकम्	36
10.	लक्ष्मी-प्राप्ति मंत्र जपविधि	39
11.	कार्जमुक्ति मंत्र	39
12.	लक्ष्मी प्राप्ति के श्लोकात्मक मंत्र	40

निवेदन

भारतीय आस्तिक धर्म-दर्शन में निर्गुण-सगुण आदि अनेक प्रकार से ईश्वरीय उपासना की जाती है। इसमें सकाम-निष्काम आदि अनेक प्रवृतियों से लोग भजन-साधन करते हैं। ब्रह्म के पांच सगुण-साकार रूप सर्वमान्य हैं। गणेश, दुर्गा, विष्णु, शिव और सूर्य ये ईश्वर कोटि के देवता हैं। इनके विविध अवतार एवं उनकी अंतरंगा शक्ति भी उपासना जगत् में प्रसिद्ध हैं।

व्यापारिक जगत् में या फिर किसी भी वर्ग में आर्थिक उन्नति के लिए समृद्धि एवं ऐश्वर्य आदि के लिए विघ्नहर्त्ता गणेश जी एवं धन की देवी श्रीविष्णु पत्नी लक्ष्मी जी की आराधना साथ-साथ की जाती है। इसके अनेक कारणों में प्रमुख कारण है कि बिना विघ्न-बाधा के दूर हुए लक्ष्मी स्थिर नहीं रह सकती है तथा अच्छी बुद्धि के बिना न तो धन आ सकता है और न रुक सकता है। दुर्बुद्धि यानि खराब बुद्धि और विघ्न-बाधा होने पर तो धन का नाश होने लगता है। अत: लक्ष्मी के साथ विघ्नहर्त्ता मंगलकर्त्ता एवं सद्बुद्धिकर्त्ता गणेश जी की पूजा-अर्चना अनिवार्य मानी जाती है। लक्ष्मी की अकेले पूजा करने से धन तो प्राप्त हो सकता लेकिन, एक तो खुद लक्ष्मी का स्वभाव चंचला है अत: स्थिर नहीं रहती दूसरा विघ्न और दुर्बुद्धि के कारण भी नहीं रहती। इसलिए लक्ष्मी के साथ गणेश की पूजा अनिवार्य मानी गयी है। शास्त्रों में और व्यावहारिक जगत् में और भी अनेक

प्रामाणिक कारण हैं किन्तु यहाँ इतना ही विवेचन समझने के लिए पर्याप्त है।

संसार में हर आदमी को बुद्धि और धन की आवश्यकता होती है। कुछ लोगों को धन के बाद बुद्धि होती है, कुछ लोगों को बुद्धि के बाद धन होता है। किन्तु दोनों में अन्योन्याश्रय संबंध है। किसी भी कार्य के लिए विघ्ननिवारण, बुद्धि और धन अर्थात् लक्ष्मी-गणेश की जरूरत हर किसी को होती है। यह आवश्यकता ब्रह्मचर्य, गृहस्थ और वानप्रस्थ आश्रम में न्यूनाधिक महसूस होती है। इनमें गृहस्थों के लिए यह अपरिहार्य होती है। केवल संन्यासी वृत्ति में और उनमें भी परमहंस एवं अवधूत अवस्थिति में इससे विमुक्त रहते हैं यदि अर्थ उनके नाम पर संचय भी होता है तो उससे लोक कल्याणकारी कार्य ही होता है।

अत: बहुत मिहनत के बाद भी जिन्हें जीवन में आर्थिक उन्नति प्राप्त नहीं होती अथवा ग्रह दोष एवं अन्य दोषों के कारण अर्थ प्राप्ति मार्ग में बाधा होती है। इसीलिए उन सभी प्रकार के बाधाओं को समाप्त करके आर्थिक उन्नति का मार्ग प्रशस्त हो इसी उद्देश्य से प्रस्तुत स्तोत्र-संकलन तैयार किया गया है। इसमें केवल श्री सूक्त एवं दो प्रकार के संपुटित श्री सूक्त, लक्ष्मी-सूक्त, धनदा-स्तोत्र, महालक्ष्मी-अष्टक एवं आरंभ में संकटनाशन गणेश स्तोत्र संकलित किया गया है। यद्यपि श्रीलक्ष्मीजी और श्री गणेश जी के अनेक स्तोत्र शास्त्रों में वर्णित हैं किन्तु यहाँ आम-आवाम को ध्यान में रखते हुए कुछ मुख्य स्तोत्रों को निबद्ध किया गया है।

साथ ही यह भी ध्यान दिया गया है कि स्तोत्रों को सभी लोग सुगमता से पढ़ सकें। अतः उसे उच्चारण के लिहाज से लम्बे संस्कृत वाक्यों को अत्यन्त छोटा-करके लिखा गया है। जो लोग संस्कृत में पाठ न कर सकते हैं वे हिन्दी में पाठ कर सकें इसीलिए हिन्दी अनुवाद भी साथ है।

कुछ लोग प्रश्न करते हैं कि स्तोत्र पाठ से क्या और कैसे लाभ होता है। महाकवि कालिदास ने लिखा है - "स्तोत्रं कथं न तुष्टये" अर्थात् स्तुति से किसकी संतुष्टि नहीं होती अर्थात् स्तुति से सभी देवों को संतुष्ट और प्रसन्न करना अनिवार्य-सा हो जाता है। अतः स्तुति से कृपा मिलती है और प्रसन्नता देने पर लाभ मिलता है। भगवान आदि शंकराचार्य जी ने कनकधारा स्तोत्र से स्वर्ण वर्षा करायी थी। ऐसे और भी अनेक उदाहरण मिलते हैं।

कुछ लोग कहते हैं कि मैं श्रीसूक्त रोज पढ़ता हूँ पर लाभ नहीं होता। इसके कई कारण हो सकते हैं यथा उच्चारण भाषा-अशुद्धि, गहन भाव का अभाव, पूर्व जन्म के बहुतेरे पाप, ताप, किसी ग्रहादिक का विशेष दुष्प्रभाव एवं अन्य कारण।

एक कारण यह भी है लक्ष्मी जी स्तोत्र के पूर्व गणेश स्तोत्र को न पढ़ना। अतः लक्ष्मी स्तोत्र के पूर्व गणेश स्तोत्र का पाठ करके भाव भक्ति पूर्वक लक्ष्मी स्तोत्र का पाठ करने से अवश्य ही लाभ होगा। इसकी सरल संक्षिप्त पाठ-विधि आगे दी जा रही है। विशेष आचार्यों से संपर्क करने से लाभ मिलेगा।

अनेक जिज्ञासुओं ने इस कार्य के लिए मुझसे आग्रह किया

था। लेकिन व्यस्तता और समयाभाव के कारण इसे विलम्ब से पूरा का प्रयास किया गया है। इस कार्य से यदि अधिक से अधिक लोग लाभान्वित हुए तो मेरे श्रम की सार्थकता होगी।

अंत में अपने मातृ-पितृ एवं समस्त गुरुजनों एवं विज्ञ मनीषी आचार्यों के प्रति अमित नमन निवेदित करता हूँ। इसमें उपयुक्त सुझावों, संशोधनों का सम्यक् स्वागत करता हूँ। आत्मीय राजेश कुमार सर्राफ ने इस प्रथम संस्करण का प्रकाशन अपने पूज्य माता-पिता के आज्ञानुसार अपने श्रद्धेय स्व० दादी-दादा जी की पुण्य-स्मृति में कराया है।

अतः उसे ऐसे पुण्य-कार्य में लगे रहने के लिए बहुत आशीर्वाद देता हूँ। पुनश्च सबके कल्याण के लिए पराम्बा से प्रार्थना करता हूँ। श्री माँ शरणम्।

निवेदक -

(स्वामी) आगमानन्द

वैशाख अमावश्या

संवत् - 2068

सरल-पाठ-विधि

रोज अपने घर या दूकान या प्रतिष्ठान में जहाँ लक्ष्मी-गणेश की प्रतिमा या चित्र हो वहाँ स्नान आदि करके पहले के चढ़ाए फूल आदि हटा दें। फिर गंगाजल छींटकर सिक्त करें। अपने ऊपर भी गंगाजल छींटकर पवित्र हो लें। फिर मूर्ति या चित्र पर थोड़ा चंदन लगावें थोड़ा चावल चढ़ावें एवं घी या तिल तेल का दीपक तथा अगरबत्ती जला दें। फिर फूल चढ़ावें, गणेश जी को विशेष रूप से दुभड़ी तथा लक्ष्मी जी को हल्दी का टुकड़ा या चूर्ण चढ़ावें दुभड़ी या हल्दी 7 या 11 पीस या कम से कम 3 पीस हो। फिर वहाँ थोड़ा-सा नैवैद्य, ऋतुफल या सूखा फल या मिठाई चढ़ावें। सभी काम सतर्कता, सावधानी निष्ठा एवं भक्तिपूर्वक करें।

बहुत सारे लोग घर या दूकान या कहीं प्रतिष्ठान में लक्ष्मी गणेश की प्रतिमा बैठाकर रखते हैं और स्नान करके आते है तुरंत थोड़ा जल छींटकर एक अगरबत्ती जलाकर तीन बार घुमाकर फिर निश्चिंत हो जाते हैं। लोग दीपावली में बड़े उत्साह से प्राण-प्रतिष्ठा एवं पूजा करते हैं लेकिन उसी दिन भरपूर मिठाइयाँ खिलाकर फिर एक साल तक लक्ष्मी-गणेश को उपवास व्रत करा देते हैं - अर्थात् उन्हें थोड़ा जल और अगरबत्ती छोड़कर कुछ नहीं मिलता। कभी-कभी तो यह भी नसीब नहीं होता।

प्राण-प्रतिष्ठा की गयी मूर्ति को कम से कम जल, चंदन, अक्षत फूल, धूप, दीप नैवेद्य जरूर अर्पित करना चाहिए यह नित्य-अर्चन कार्य सफल करता है।

नित्य जल, चंदन, अक्षत, फूल नैवेद्य आदि अर्पण के बाद थोड़ा देर ध्यान कर लें फिर गणेश स्तोत्र का पाठ कर फिर श्री सूक्त एवं अन्य लक्ष्मी स्तोत्र का पाठ करें पाठ में गणेश स्तोत्र तो नित्य पढें ही इसके बाद श्री सूक्त का पाठ करें। एक केवल श्री सूक्त, दूसरा बीज सम्पूटित और तीसरा रूद्रयामल तंत्र में कहे गये दो मंत्रों से विशेष सम्पुटित श्री सूक्त। इनमें किसी एक का ही पाठ करें। फिर यदि मौका या समय मिले तो अन्य तीन लक्ष्मी स्तोत्र का भी पाठ कर लें। इसमें कुल चार लक्ष्मी स्तोत्र हैं। रोज एक स्तोत्र श्रीसूक्त पढ़े या दो भी, या तीन या चारों पढ़ सकते हैं। इसमें भी समय का अभाव हो तो दो दिन में दो शाम या रात में पढ़ें।

जो खुद पाठ कर सकते हैं वे खुद करें तो बहुत अच्छी बात है। अन्यथा यह किसी पंडित से भी कराया जा सकता है। यह काम सुबह-शाम दोनों वक्त करें तो सबेरे अवश्य करें। यदि सबेरे समय न मिले तो संध्या में अवश्य करें। इससे अवश्य ही जीवन में बहुत प्रकार का लाभ मिलेगा।

किसी भी सोमवार या बुध या शुक्रवार या अष्टमी या

अमावश्या को आरंभ करें। पाठ 1 माह 3 माह या 6 माह करें। यदि पूरे वर्ष भर करें तो बहुत अच्छा यदि संस्कृत में पाठ न कर सकें तो हिन्दी में करें। जो लोग रोज पाठ करते हैं वे यदि किसी कारण से बाहर चले जाते हैं तो कोई दूसरा सदस्य करें या किसी से भी उस दिन करा लें।

इस प्रकार यदि विधि-पूर्वक श्रद्धा-भक्ति-निष्ठा से लक्ष्मी गणेश की पूजा अर्चना स्तोत्र पाठ किया जाय तो निश्चय ही भक्तों को काफी लाभ होगा एवं श्री लक्ष्मी माता की एवं गणेश जी की कृपा बनी रहेगी।

हरेक आमावश्या को श्री सूक्त के पन्द्रह श्लोकों (मंत्रों) एवं अन्य मंत्रों से केवल घी से हवन करें या बेल की छोटी लकड़ी को घी में डालकर हवन करें यह काम यदि दूकान प्रतिष्ठान में संभव न हो तो घर में ही करें या किसी पंडित से करा लें। यह अतिलाभकारी होगा।

विशेष पुरश्चरण एवं अनुष्ठान की प्रक्रिया के लिए विज्ञ आचार्यों से सम्पर्क करें।

संकट नाशन-गणेश-स्तोत्रम्

नारद-उवाच

प्रणम्य शिरसा देवम् गौरी-पुत्रम् विनायकम्।
भक्ता-वासम् स्मरेन्-नित्य-मायुःकामार्थ-सिद्धये।।1।।

प्रथमम् वक्र-तुण्डम् च एक दन्तम् द्वितीयम्।
तृतीयम् कृष्ण-पिंगाक्षम् गज्-वक्त्रम् चतुर्थकम्।।2।।

लम्बो-दरम् पंचमम् च षष्ठम् विकट-मेव च।
सप्तम् विघ्नराजम् च धूम्र-वर्णम् तथाष्ट-मम्।।3।।

नवमम् भाल-चंद्रम, च दशमम् तु विनायकम्।
एकादशम् गण-पतिम् द्वादशम् तु गजाननम्।।4।।

द्वादशै-तानि नामानि त्रि-संध्यम् यः पठेन्-नरः।
न च विघ्न-भयम् तस्य सर्व-सिद्धि-करम् प्रभो।।5।।

विद्यार्थी लभते विद्याम् धनार्थी लभते धनम्।
पुत्रार्थी लभते पुत्रान् मोक्षार्थी लभते गतिम्।।6।।

जपेद्-गणपति-स्तोत्रम् षडभिर्-मासैः फलम् लभेत्।
संवत्-सरेण सिद्धिम् च लभते नात्र संशयः।।7।।

अष्टभ्यो ब्राह्मणे-भ्यश्च लिखित्वा यः समर्पयेत्।
तस्य विद्या भवेत्-सर्वा गणेशस्य प्रसादतः।।8।।

श्री संकट-नाशन-गणेश-स्तोत्रम्
श्रीगणेश-अर्पण-मस्तु।

श्री संकटनाशन गणेश स्तोत्र

(हिन्दी अनुवाद)

नारद जी बोले - गौरी पुत्र देव श्रेष्ठ गणेश जी को पहले सिर झुकाकर प्रणाम करे। फिर भक्तों के आवास स्थल श्री गणेश जी का नित्य स्मरण अपनी आयु कामना और अर्थ सिद्धि के लिए करे।।1।। पहला वक्रतुण्ड, दूसरा एकदन्त तीसरा कृष्ण-पिंगाक्ष और चौथा गजवक्त्र।2। पाचवाँ विघ्नराज, षष्ठ विकट आठवाँ धूम्रवर्ण।3। नवमा भालचन्द्र, दसवाँ विनायक, ग्यारहवाँ गणपति और गजानन।4। जो पुरुष इन बारह नामों का प्रातः, दोपहर और शाम में पाठ करता है उसे विघ्नों का भय नहीं रहता और साथ ही वह सभी सिद्धियों को प्रदान करता है।5। इसे पाठ करने से विद्यार्थी विद्या, धनार्थी धन, पुत्र की चाह रखने वाले पुत्र और मोक्षार्थी मोक्ष प्राप्त करता है।6।

जो इस गणेश स्तोत्र का जप छः मास तक नियमित रूप से करता है वह निश्चित रूप से अभीष्ट फल प्राप्त करता है तथा एक वर्ष में पूर्ण सिद्धि प्राप्त करता है- इसमें संशय नहीं है।7। जो इसे लिखकर आठ ब्राह्मणों को समर्पित करता है वह गणेश जी की कृपा से सभी विद्या प्राप्त करता है।8।

श्रीऋग्वेदोक्तम् श्रीसूक्तम्

ॐ हिरण्य-वर्णाम् हरिणीम् सुवर्ण-रज-तस्र-जाम।
चन्द्राम् हिरण्मयीम् लक्ष्मीम् जात-वेदो म आ वह।।1।।

ताम् म आ वह जात-वेदो लक्ष्मी-मनप-गामि-नीम्।
यस्याम् हिरण्यम् विन्देयम् गामश्वम् पुरूषा-नहम्।।2।।

अश्व-पूर्वाम् रथ-मध्याम् हस्ति-नाद-प्रमो-दिनीम्।
श्रियम् देवी-मुप ह्वये श्रीर् मा देवी जुष-ताम्।।3।।

काम्सोस्मि-ताम्हिरण्य-प्रकारा मार्द्राम्ज्वलन्तीम्तृप्ताम्तर्पयन्तीम्।
पद्मे-स्थिताम् पद्म-वर्णाम् तामि-होप ह्वये श्रियम्।।4।।

चंद्राम् प्रभासाम् यशसा ज्वलन्तीम् श्रियम् लोके देव-जुष्टा-मुदारम्।
ताम्पद्मि-नीमीम्शरणम्प्रपद्ये अलक्ष्मीर्-मे नश्यताम्त्वाम्वृणे।।5।।

आदित्य-वर्णे तपसोऽधि जातो वनस्-पतिस्-तव वृक्षोऽथ बिल्वः।
तस्य फलानि तपसा नुदन्तु या अन्तरा याश्च बाह्या अलक्ष्मीः।।6।।

उपैतु माम् देव-सखः कीर्तिश्च मणिना सह।
प्रादुर-भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽ-स्मिन् कीर्ति-मृद्धिम् ददातु मे।।7।।

क्षुत्-पिपासामलाम् ज्येष्ठा मलक्ष्मीम् नाश-याम्य-हम्।
अभूतिम्-समृद्धिम् च सर्वाम् निर्गुद मे गृहात्।।8।।

गंध-द्वाराम् दुरा-धर्षाम् नित्य-पुष्टाम् करीषि-णीम्।
ईश्वरीम् सर्व-भूता-नाम् तामि-होप ह्वये श्रियम्।।9।।

मनसः काम-माकूतिम् वाचः सत्यम्-शीमहि।
पशूनाम रूप-मन्नस्य मयि श्रीः श्रयताम् यशः।।10।।

कर्दम-मेन प्रजा भूता मयि संभव कर्दम।
श्रियम् वासय मे कुले मातरम् पद्म-मालिनीम्।।11।।

आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे।
नि च देवीम् मातरम् श्रियम् वासय मे कुले।।12।।

आर्-द्राम् पुष्करि-णीम् पुष्टिम् पिंगलाम् पद्म-मालिनी्। चन्द्राम्
हिरण्मयीम् लक्ष्मीम् जातवेदो म आ वह।।13।।

आर्-द्राम् यः करिणीम् यष्टिम् सुवर्णाम् हेम-मालिनीम्।
सूर्याम् हिरण्यमयीम् लक्ष्मीम् जातवेदो म आ वह।।14।।

ताम् म आ वह जातवेदो लक्ष्मी-मनप-गामिनीम्।
यस्याम्हिरण्यम्प्रभूतम्गावोदास्योऽ-श्वान्विन्देयम्पुरुषा-नहम्।।15।।

यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुया-दाज्य-मन्वहम्।
सूक्तम् पंच-दशर्-चम् श्रीकामः सततम् जपेत्।।16।।

श्रीरुद्रयामलोक्त संपुटित श्री सूक्तम्

ॐश्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद
प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः
ॐ दुर्गे स्मृता हरसि भीतिम्-शेष-जन्तोः
स्वस्थैः स्मृता मति-मतीव शुभाम् ददासि।
ॐ हिरण्य-वर्णाम् हरिणीम् सुवर्ण-रज-तस्र-जाम्।
चन्द्राम् हिरण्मयीम् लक्ष्मीम् जात-वेदो म आ वह।।1।।
दारिद्रय-दुःख-भय-हारिणि का त्व-दन्या
सर्वोप-कार-करणाय सदाऽर्द्र-चित्ता।
ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद
प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः।।

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद
श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः
ॐ दुर्गे स्मृता हरसि भीतिम्-शेष-जन्तोः
स्वस्थैः स्मृता मति-मतीव शुभाम् ददासि।
ताम् म आ वह जात-वेदो लक्ष्मी-मनप-गामि-नीम्।
यस्याम् हिरण्यम् विन्देयम् गामश्वम् पुरूषा-नहम्।।2।।
दारिद्रय-दुःख-भय-हारिणि का त्व-दन्या
सर्वोप-कार-करणाय सदाऽऽर्द्र-चित्ता।।
ॐश्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद
प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः।।

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद
श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः

ॐ दुर्गे स्मृता हरसि भीतिम्-शेष-जन्तोः
स्वस्थैः स्मृता मति-मतीव शुभाम् ददासि।
अश्व-पूर्वाम् रथ-मध्याम् हस्ति-नाद-प्रमो-दिनीम्।
श्रियम् देवी-मुप ह्वये श्रीर् मा देवी जुष-ताम्।।3।।
दारिद्रय-दुःख-भय-हारिणि का त्व-दन्या
सर्वोप-कार-करणाय सदाऽऽर्द्र-चित्ता।।
ॐश्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद
प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः।।

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद
श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः
ॐ दुर्गे स्मृता हरसि भीतिम्-शेष-जन्तोः
स्वस्थैः स्मृता मति-मतीव शुभाम् ददासि।
काम् सोस्मि ताम् हिरण्य-प्रकारा
मार्द्राम्-ज्वलन्तीम् तृप्ताम् तर्पयन्तीम्।
पद्मे-स्थिताम् पद्म-वर्णाम् तामि-होप ह्वये श्रियम्।।4।।
दारिद्रय-दुःख-भय-हारिणि का त्व-दन्या
सर्वोप-कार-करणाय सदाऽऽर्द्र-चित्ता।।
ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद
प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः।।

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद
श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः
ॐ दुर्गे स्मृता हरसि भीतिम्-शेष-जन्तोः
स्वस्थैः स्मृता मति-मतीव शुभाम् ददासि।

चंद्राम् प्रभासाम् यशसा ज्वलन्तीम् श्रियम् लोके देव-जुष्टा-मुदारम्।
ताम् पद्मि-नीमीम् शरणम् प्रपद्य अलक्ष्मीर्-मे नश्यताम् त्वाम् वृणे।।5।।
दारिद्रय-दुःख-भय-हारिणि का त्व-दन्या
सर्वोप-कार-करणाय सदाऽऽर्द्र-चित्ता।।
ॐश्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद
प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः।।

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद
श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः
ॐ दुर्गे स्मृता हरसि भीतिम्-शेष-जन्तोः
स्वस्थैः स्मृता मति-मतीव शुभाम् ददासि।
आदित्य-वर्णे तपसोऽधि जातो वनस् पतिस्-तव वृक्षोऽथ बिल्वः।
तस्य फलानि तपसा नुदन्तु या अन्तरा याश्च बाह्या अलक्ष्मीः।।6।।
दारिद्रय-दुःख-भय-हारिणि का त्व-दन्या
सर्वोप-कार-करणाय सदाऽऽर्द्र-चित्ता।।
ऊँ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद
प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः।।

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद
श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः
ॐ दुर्गे स्मृता हरसि भीतिम्-शेष-जन्तोः
स्वस्थैः स्मृता मति-मतीव शुभाम् ददासि।
उपैतु माम् देव-सखः कीर्तिश्च मणिना सह।
प्रादुर्-भूतोऽ-स्मि राष्ट्रे-स्मिन् कीर्ति मृद्धिम् ददातु मे।।7।।
दारिद्रय-दुःख-भय-हारिणि का त्व-दन्या

सर्वोप-कार-करणाय सदाऽऽर्द्र-चित्ता।।
ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद
प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः।।

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद
श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः
ॐ दुर्गे स्मृता हरसि भीतिम्-शेष-जन्तोः स्वस्थैः
स्मृता मति-मतीव शुभाम् ददासि।
क्षुत-पिपासामलाम् ज्येष्ठा मलक्ष्मीम् नाश-याम्य-हम्।
अभूतिम्-समृद्धिम् च सर्वांम् निर्गुद मे गृहात्।।8।।
दारिद्रय-दुःख-भय-हारिणि का त्व-दन्या
सर्वोप-कार-करणाय सदाऽऽर्द्र-चित्ता।।
ऊँ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद
प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः।।

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद
श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः
ॐ दुर्गे स्मृता हरसि भीतिम्-शेष-जन्तोः
स्वस्थैः स्मृता मति-मतीव शुभाम् ददासि।
गंध-द्वाराम् दुरा-धर्षाम् नित्य-पुष्टाम् करीषि-णीम्।
ईश्वरीम् सर्व-भूता-नाम् तामि-होप ह्वये श्रियम्।।9।।
दारिद्रय-दुःख-भय-हारिणि का त्व-दन्या
सर्वोप-कार-करणाय सदाऽऽर्द्र-चित्ता।।
ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद
प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः।।

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद
श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः ।।
ॐ दुर्गे स्मृता हरसि भीतिम्-शेष-जन्तोः
स्वस्थैः स्मृता मति-मतीव शुभाम् ददासि।
मनसः काम-माकूतिम् वाचः सत्यम्-शीमहि
पशूनाम् रूप-मन्नस्य मयि श्रीः श्रयताम् यशः।।10।।
दारिद्रय-दुःख-भय-हारिणि का त्व-दन्या
सर्वोप-कार-करणाय सदाऽऽर्द्र-चित्ता।।
ॐश्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद
प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः।।

ॐश्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद
श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः
ॐ दुर्गे स्मृता हरसि भीतिम्-शेष-जन्तोः
स्वस्थैः स्मृता मति-मतीव शुभाम् ददासि।
कर्द-मेन प्रजा भूता मयि संभव कर्दम।
श्रियम् वासय मे कुले मातरम् पद्म-मालिनीम्।।11।।
दारिद्रय-दुःख-भय-हारिणि का त्व-दन्या
सर्वोप-कार-करणाय सदाऽऽर्द्र-चित्ता।।
ॐश्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद
प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः।।

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद
श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः
ॐ दुर्गे स्मृता हरसि भीतिम्-शेष-जन्तोः

स्वस्थैः स्मृता मति-मतीव शुभाम् ददासि।
आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे।
नि च देवीम् मातरम् श्रियम् वासय मे कुले।।12।।
दारिद्रय-दुःख-भय-हारिणि का त्व-दन्या
सर्वोप-कार-करणाय सदाऽऽर्द्र-चित्ता।।
ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद
प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः।।

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद
श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः
ॐ दुर्गे स्मृता हरसि भीतिम्-शेष-जन्तोः
स्वस्थैः स्मृता मति-मतीव शुभाम् ददासि।
आर्-द्राम् पुष्करि-णीम् पुष्टिम् पिंगलाम् पद्म-मालिनीम्।
चन्द्राम् हिरण्मयीम् लक्ष्मीम् जातवेदो म आ वह।।13।।
दारिद्रय-दुःख-भय-हारिणि का त्व-दन्या
सर्वोप-कार-करणाय सदाऽऽर्द्र-चित्ता।।
ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद
प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः।।

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद
श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः
ॐ दुर्गे स्मृता हरसि भीतिम्-शेष-जन्तोः
स्वस्थैः स्मृता मति-मतीव शुभाम् ददासि।
आर्-द्राम् यः करिणीम् यष्टिम् सुवर्णाम् हेम-मालिनीम्।
सूर्याम् हिरण्मयीम् लक्ष्मीम् जातवेदो म आ वह।।14।।

दारिद्रय-दुःख-भय-हारिणि का त्व-दन्या
सर्वोप-कार-करणाय सदाऽऽर्द्र-चित्ता।।
ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद
प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः।।

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद
श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः
ॐ दुर्गे स्मृता हरसि भीतिम्-शेष-जन्तोः
स्वस्थैः स्मृता मति-मतीव शुभाम् ददासि।
ताम् म आ वह जातवेदो लक्ष्मी-मनप-गामिनीम्।
यस्याम् हिरण्यम् प्रभूतम् गावो दास्योऽश्वान् विन्देयम् पुरुषानहम्।।15।।
दारिद्रय-दुःख-भय-हारिणि का त्व-दन्या
सर्वोप-कार-करणाय सदाऽऽर्द्र-चित्ता।।
ॐॐश्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद
प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः।।

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद
श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः
ॐ दुर्गे स्मृता हरसि भीतिम्-शेष-जन्तोः
स्वस्थैः स्मृता मति-मतीव शुभाम् ददासि।
यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुया-दाज्य-मन्वहम्।
सूक्तम् पंच-दशर्-चम् श्रीकामः सततम् जपेत्।।16।।
दारिद्रय-दुःख-भय-हारिणि का त्व-दन्या
सर्वोप-कार-करणाय सदाऽऽर्द्र-चित्ता।।
ॐॐश्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद
प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः।।

बीज मंत्र संपुटित श्रीसूक्तम्

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै नमः

ॐ हिरण्य-वर्णाम् हरिणीम् सुवर्ण-रज-तस्र-जाम्।
चन्द्राम् हिरण्मयीम् लक्ष्मीम् जात-वेदो म आ वह।।1।।

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै नमः

ताम् म आ वह जात-वेदो लक्ष्मी-मनप-गामि-नीम्।
यस्याम् हिरण्यम् विन्देयम् गामश्वम् पुरूषा-नहम्।।2।।

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै नमः

अश्व-पूर्वाम् रथ-मध्याम् हस्ति-नाद-प्रमो-दिनीम्।
श्रियम् देवी-मुप ह्वये श्रीर् मा देवी जुष-ताम्।।3।।

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै नमः

काम्सोस्मि ताम्हिरण्य-प्रकारा मार्द्रां ज्वलन्तीम्तृप्ताम्तर्पयन्तीम्।
पद्मे-स्थिताम् पद्म-वर्णाम् तामि-होप ह्वये श्रियम्।।4।।

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै नमः

चंद्राम् प्रभासाम् यशसा ज्वलन्तीम् श्रियम् लोके देव-जुष्टा-मुदारम्।
ताम्पद्मि-नीमीम शरणम्प्रपद्येअलक्ष्मीर्-मे नश्यताम्त्वाम्वृणे।।5।।

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै नमः

आदित्य-वर्णे तपसोऽधि जातो वनस्-पतिस्-तव वृक्षोऽथ बिल्वः।
तस्य फलानि तपसा नुदन्तु या अन्तरा याश्च बाह्या अलक्ष्मीः।।6।।

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै नमः

उपैतु माम् देव-सखः कीर्तिश्च मणिना सह।
प्रादुर्-भूतोऽ-स्मि राष्ट्रेऽ-स्मिन् कीर्ति-मृद्धिम् ददातु मे।।7।।

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै नमः

क्षुत्-पिपासा-मलाम् ज्येष्ठा मलक्ष्मीम् नाश-याम्य-हम्।
अभूतिम्-समृद्धिम् च सर्वाम् निर्गुद मे गृहात्।।8।।

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै नमः

गंध-द्वाराम् दुरा-धर्षाम् नित्य-पुष्टाम् करीषि-णीम्।
ईश्वरीम् सर्व-भूता-नाम् तामि-होप ह्वये श्रियम्।।9।।

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै नमः

मनसः काम-माकूतिम् वाचः सत्यम्-शीमहि।
पशूनाम रूप-मन्नस्य मयि श्रीः श्रयताम् यशः।।10।।

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै नमः

कर्द-मेन प्रजा भूता मयि संभव कर्दम।
श्रियम् वासय मे कुले मातरम् पद्म- मालिनीम्।।11।।

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै नमः

आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे।
नि च देवीम् मातरम् श्रियम् वासय मे कुले।।12।।

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै नमः

आर्-द्राम् पुष्करि णीम् पुष्टिम् पिंगलाम् पद्म-मालिनीम्।
चन्द्राम हिरण्मयीम् लक्ष्मीम् जातवेदो म आ वह।।13।।

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै नमः

आर्-द्राम् यः करिणीम् यष्टिम् सुवर्णाम् हेम-मालिनीम्।
सूर्याम् हिरण्मयी म् लक्ष्मीम् जातवेदो म आ वह।।14।।

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै नमः

ताम् म आ वह जातवेदो लक्ष्मी-मनप-गामिनीम्।
यस्याम्हिरण्यम्प्रभूतम्गावोदास्योऽ-श्वान्विन्देयम्पुरुषा-नहम्।।15।।

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै नमः

यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुया-दाज्य-मन्वहम्।
सूक्तम् पंच-दशर्-चम् श्रीकामः सततम् जपेत्।।16।।

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै नमः

बीज संपुटि श्रीसूक्त अम्बा-अर्पण मस्तु

श्री सूक्त के अर्थ

हे जातवेद अग्निदेव! आप सोने के समान सुनहले और थोड़े हरे रंगवाली, सोने और चांदी की माला धारण करने वाली, चन्द्रमा के समान प्रसन्न रहकर संसार को भी प्रसन्न करने वाली सोने के समान सुनहले रंगवाली स्वर्णादि सम्पत्ति से युक्त श्री लक्ष्मी देवी का मेरे लिए आवाहन करें या पास बुलावें।।1।।

हे जातवेद अग्निदेव! आप सम्पूर्ण ऐश्वर्य की देवी उन श्री लक्ष्मी देवी का मेरे लिए आवाहन करें जिनका कभी नाश नहीं होता अर्थात् स्थिर लक्ष्मी का आवाहन करें जिनके आगमन से मैं सोना, गौ, घोड़े, पुत्र एवं समस्त पुरुषार्थों को प्राप्त करूँगा।।2।।

जो लक्ष्मी देवी रथ के मध्य भाग में अपने सम्पूर्ण वैभव के साथ बैठी हुई है और उस रथ के आगे सुन्दर घोड़े जुते हुए रहते है और जो हाथियों के चिग्घाड़ को सुनकर प्रसन्न होती है और संसार को भी प्रसन्न करती हैं उन लक्ष्मी देवी कृपा पूर्वक मेरे घर में आकर स्थायी रुप से निवास करें।।3।।

जो साक्षात् ब्रह्मस्वरूपा, मंद-मंद मुस्कान सर्वत्र विखेरने वाली सोने के आवरण से चारो ओर घिरी हुई हैं, दया- करूणा से द्रवित हृदयवाली, अत्यन्त प्रज्वलित अग्नि के समान दीप्तिवाली, पूर्णकामा होने के कारण समस्त भक्तों के मनोरथ को सदापूर्ण करने वाली, कमल के आसन पर स्थित, कमल के समान रूप वाली लक्ष्मी देवी को मैं अपने पास रहने के लिए आदर पूर्वक बुलाता हूँ।।4।।

चंद्रमा के समान शुभ्र सुन्दर प्रकाशवाली, अतिशय

प्रभापुंजवाली, यश रूपी प्रकाश से जगमगानेवाली, स्वर्गलोक में इन्द्रादि देवताओं से सदा पूजित होने वाली, अति उदार भाव से दानकार्यों में निरत रहने वाली, कमल फूल के मध्य में रहकर हाथों में कमलपुष्प धारण करने वाली हे लक्ष्मी! मैं आपकी शरण में हूँ। मेरी सारी दरिद्रता दूर हो जाए इसीलिए मैं आपको वरण करता हूँ अर्थात् आपकी शरणागति ग्रहण करता हूँ।।5।।

सूर्य के समान अत्यन्न प्रकाशवाली लक्ष्मी! आपकी कठिन तपस्या से ही बिना फूल के फल देने वाला, सभी वनस्पतियों में श्रेष्ठ सबकी मनोकामना पूर्ण करने वाला, मंगलमय विल्व-वृक्ष आपके हाथ में उत्पन्न हुआ। उस विल्व (बेल) वृक्ष के फल आपके तप के अनुग्रह से मेरे जीवन की समस्त बाहरी और भीतरी दरिद्रता को दूर करें अर्थात् मेरे अलक्ष्मी को नष्ट कर लक्ष्मी की कृपा-दृष्टि सतत् प्रदान करें।।6।।

हे लक्ष्मी देवी! देवताओं के परमसखा धन के देवता कुबेर एवं उनके मित्र समस्त मणियों के अधिष्ठाता मणिभद्र चिन्तामणि तथा दक्ष-प्रजापति की परम ऐश्वर्यशालिनी कन्या कीर्ति मुझे प्राप्त हों अर्थात् मुझे प्रचुर धन और यश मिले। मैं इस देश में अर्थात् धन की आवश्यकता वाले संसार में उत्पन्न हुआ हूँ। अतः हे लक्ष्मी! देवी!! आप मुझे कुबेर का अक्षय धन एवं ऐश्वर्य तथा प्रभूतमात्रा में सर्वत्र सुगन्ध की तरह फैलने वाली कीर्ति (यश) मुझे शीघ्र प्रदान करें।।7।।

जो क्षुधा यानी भूख और पिपासा अर्थात् प्यास से सदा मलिन अथवा क्षीणकाय रहती है जो लक्ष्मी की बड़ी बहन और दरिद्रता की अधिष्ठात्री देवी अलक्ष्मी है उस अलक्ष्मी यानी दरिद्रता का मैं सदा के लिए विनाश चाहता हूँ। अतः हे लक्ष्मी देवी! आपसे मैं करबद्ध प्रार्थना करता हूँ कि आप अभूति अर्थात् ऐश्वर्यहीनता और

असमृद्धि अर्थात् समृद्धि के समस्त अमंगल को दूर कर मुझे ऐश्वर्य और समृद्धि प्रदान करें।।8।

सुगन्धि जिनका प्रवेश द्वार है अर्थात् सम्पूर्ण सुगन्धित फूलों एवं द्रव्यों को आपके द्वार पर यानी आपके पास भक्त अर्पित कर आपको बुलाने में प्रसन्नता का अनुभव करते हैं और जो दुराधर्षा हैं अर्थात् जो कभी किसी से न दबने योग्य हैं। जो नित्य पुष्टा हैं अर्थात् नित्य धन-धान्य गौ-अश्व आदि से नित्य पुष्ट रखनेवाली हैं। जो गोमय अर्थात गाय के गोबर के बीच में निवास करने वाली हैं। उन सभी जीवों की स्वामिनी लक्ष्मी देवी का मैं अपने घर में आवाहन करता हूँ। वे मेरे घर में आकर सदा निवास करें।।9।।

मन में उपजनेवाली समस्त कामनाओं को सदा पूर्ण करने वाली मन के द्वारा किए गए सभी संकल्पों को सर्वदा सिद्धि प्रदान करने वाली वाणी को हमेशा सत्य से ओत-प्रोत रखने वाली, गाय, घोड़ा, हाथी आदि पशुओं एवं विभिन्न अन्न आदि भोज्य पदार्थों के रूप में सबको सुख देनेवाली तथा यश प्रदान करने वाली लक्ष्मी सदा सर्वदा मेरे घर में निवास करें अर्थात् इन सभी ऐश्वर्य को मैं प्राप्त करूँ।।10।।

कर्दम ऋषि से ही समस्त प्रजाओं की सृष्टि हुई है अर्थात् हम सभी लक्ष्मी-पुत्र कर्दम की संतान है। हे कर्दम ऋषि! आप हमारे यहाँ उत्पन्न होवें अर्थात् मेरे घर पुत्र रूप में आएँ तो मुझ पर लक्ष्मी की कृपा बनी ही रहेगी। हे कर्दम मुनि! आप सुन्दर लाल कमल पुष्पों की माला धारण करनेवाली माता लक्ष्मी देवी को मेरे कुल में स्थायी निवास करावें।।11।।

समुद्र-मंथन में जल से चौदह रत्नों के साथ लक्ष्मी देवी का

आविर्भाव हुआ। जिस जल से लक्ष्मी जी आविर्भूत हुई उस जल के देवता वरूण स्निग्ध पदार्थों की सृष्टि करें। हे लक्ष्मी-पुत्र चिक्लीत! आप मेरे घर में वास करें और माता लक्ष्मी को भी मेरे कुल में स्थिर भाव से सदा निवास करायें।।12।।

हे जातवेद अग्निदेव! अत्यन्त आर्द्र यानी कोमल स्वभाववाली, अपने हाथों में सुन्दर लाल कमल कुसुम धारण करने वाली, सम्पूर्ण पुष्टि को अर्थात् समग्र आवश्यक वस्तुओं को अपने भक्तों को प्रदान करने वाली, पिंगला अर्थात्, पीला रंगमय स्वरूपवाली, रक्तिम कमलों की सुन्दर माला धारण करने वाली, चन्द्रमा के समान अत्यन्न शुभ्र कान्तिवाली, स्वर्णयुक्ता एवं स्वर्ण के समान सुनहला स्वरूप धारण करनेवाली श्रीलक्ष्मी देवी को मेरे घर में सादर बुलावें।।13।।

हे जातवेद अग्ने! जो दुष्टों को दलन करने वाली होने पर भी अति कोमल स्वभाव की हैं, जो सर्वदा मंगलदायिनी यष्टिरूप में सबको आलम्बन प्रदान करनेवाली हैं, स्वर्ण के समान तेजोमय सुन्दर वर्णवाली, सोने की माला धारण करनेवाली सूर्य के सदृश प्रभावाली, हिरण्यमयी लक्ष्मी देवी का आवाहन मेरे कल्याण के लिए करें।।14।।

हे जातवेद अग्ने! जिनके शुभागमन से मुझे बहुत से धन, गौएँ, दास-दासियाँ घोड़े और पुत्रादि प्राप्त हों उन कभी विनाश न होनेवाली अर्थात् सदा मेरे पास रहने वाली लक्ष्मी देवी का आवाहन करें।।15।।

जिसे सम्पूर्ण ऐश्वर्यशालिनी स्थिर लक्ष्मी की कामना हो वह प्रतिदिन पवित्र और संयमशील होकर अग्नि में घी की आहुतियाँ पन्द्रह ऋचाओं का मंत्र बोलते हुए दें तथा नित्य श्रद्धा-भक्ति-विश्वास पूर्वक लक्ष्मी जी का ध्यान करते हुए पन्द्रह ऋचाओं (मंत्रों) वाले श्री सूक्त का पाठ सुबह-शाम करें।।16।।

श्री लक्ष्मी-सूक्तम्

पद्मा-ननने पद्मिनि पद्म-पत्रे
पद्म-प्रिये पद्म-दलाय-ताक्षि।
विश्व-प्रिये विश्व मनोऽनु-कूले
त्वत्-पाद-पद्ममम्मयि सन्नि-धत्स्व।।1।।

पद्मा-ननने पद्म ऊरू पद्-माक्षी पद्म-संभवे।
तन्मे भजसि पद्-माक्षि येन सौख्यम्-लभा-म्यहम्।।2।।

अश्वदायी गो-दायी धन-दायी महा-धने।
धनम् मे जुष ताम् देवि सर्वान् कामाँश्च देहि मे।।3।।

पुत्रम् पौत्रम् धनम् धान्यम् हस्त्य-श्वादि-गवे-रथम्।
प्रजा-नाम् भवसि माता आयुष-मन्तम् करोतु मे।।4।।

धन-मग्निर-धनम् वायुर्-धनम् सूर्यो धनम् वसु।
धन-मिन्द्रो वृहस्पतिर् वरुणम् धन-मस्तु मे।।5।।

वैन-तेय सोमम् पिव सोमम् पिबतु वृत्रहा।
सोमम् धनस्ये सोमिनो मह्यम् ददातु सोमिनः।।6।।

न क्रोधो न च मात्सर्यम् न लोभो नाशुभा मतिः।
भवतिः कृत-पुण्यानाम् भक्तानाम् सूक्त-जापि-नाम्।।7।।

सर-सिज-निलये सरोज-हस्ते
धवल-तरांशुक गन्ध-माल्य-शोभे।
भगवति हरि-बल्लभे मनोज्ञे
त्रिभुवन-भूति-करी प्रसीद मह्यम्।।8।।

विष्णु-पत्नीम् क्षमाम् देवीम् माधवीम् माधव-प्रियाम्।
लक्ष्मीम् प्रिय-सखीम् देवीम् ना-म्युच्युत-वल्लभाम्।।9।।

महा-देव्यै च विद्-महे विष्णु-पत्न्यै च धीमहि।
तन्नो: लक्ष्मी: प्र-चोद-यात्।।10।।

चन्द्र-प्रभाम् लक्ष्मी-मैशानीम् सूर्या-भाम् लक्ष्मी-मैश्व-रीम्।
चन्द्र-सूर्याग्नि-संकाशा श्रियम् देवी-मुपास्-महे।।11।।

श्रीर्-वर्चस्व-मायुष्य-मारोग्य माभि-धाच्-छोभ-मानम् महीयते।
धान्यम धनम्पशुभ्बहु-पुत्र-लाभम्शत-सम्वत्-सरम्-दीर्घ-मायुः।।12।।

श्री लक्ष्मी सूक्तम् अम्बा अर्पण-मस्तु

श्री लक्ष्मी-सूक्तम्

अनुवाद

हे कमल-सदृश मुखवाली! आप पद्मिनी हैं, कमल पत्र में स्थिर रहती है, कमल आपको प्रिय है, कमल दल के समान आपके नेत्र हैं। हे विश्वप्रिये! आप विश्वंभर विष्णु के मनोनुकूल रहती हैं आपके चरण-कमल मेरे हृदय में सदा स्थित रहें।।1।।

हे पद्मानने! आप का जन्म कमल से हुआ है, आपकी जाघें और नेत्र कमल के समान हैं। हे कमल के समान है। हे कमल के सदृश नेत्र वाली लक्ष्मी देवी आप मेरे उपर दया दृष्टि कीजिए। जिससे मैं समस्त सुखों को शीघ्र प्राप्त कर सकूँ।।2।।

हे महाधन वाली महालक्ष्मी! आप घोड़ा, गो और सब प्रकार का धन देने वाली हैं। आप मुझे पर्याप्त धन दीजिए और मेरी समस्त कामनाओं को पूर्ण कीजिए।।3।।

हे लक्ष्मी देवी! आप समस्त जगत् की माता हैं। आप मुझे पुत्र, पोता, धन, धान्य, हाथी, घोड़ा, गाय, बैल, रथ आदि से सम्पन्न करके मुझे पूर्ण आयुष्मान् बना दें।।4।।

अग्नि, वायु, सूर्य, वसु, इन्द्र, वृहस्पति, वरुण धन हैं ये सब मुझे प्राप्त हों अर्थात् इनके द्वारा मुझे धन मिले।।5।।

गरुड़, वृत्रासुर को मारनेवाले इन्द्र सोमपान करें। हे सोमिन! ये सोमपायी मुझे सोमयुक्त धन प्रदान करें।।6।।

इस लक्ष्मी सूक्त का जप या पाठ करनेवाले को क्रोध, मत्सरता, लोभ और अशुभ बुद्धि नहीं होती है। पाठ करने वाले भक्तजन को अनेक पुण्य प्राप्त होते हैं।।7।।

हे भगवति हरि पत्नी लक्ष्मी माता! कमल आपका घर है आपके हाथ में कमल है। आप धवल वस्त्र, गन्ध (चंदन) कमल की माला धारण करती हैं। हे सुन्दरी! आप सबके मन की बात जानती हैं। आप त्रिभुवन की सम्पत्ति प्रदान करने वाली हैं, आप मेरे उपर प्रसन्न होइये।।8।।

हे माता! आप विष्णु की पत्नी, क्षमा, देवी, माधवी, माधव-प्रिया, लक्ष्मी, प्रिय सखी, अच्युतवल्लभा अर्थात् विष्णु की अर्धांगिनी हैं आपको बार-बार नमस्कार करता हूँ।।9।।

महादेवी महालक्ष्मी देवी को मैं अच्छी तरह जानता हूँ; उन विष्णु भगवान की पत्नी का मनोयोगपूर्वक ध्यान करता हूँ। वे लक्ष्मी देवी हमारी बुद्धि को धर्मकार्यों में प्रेरित करें, कृपा करें।।10।।

चंद्रप्रभारूपा ऐशानी स्वरूपा, सूर्य प्रभारूपा, ऐश्वर्यरूपा, चंद्र, सूर्य और अग्नि स्वरूपा श्रीदेवी लक्ष्मी की मैं उपासना करता हूँ।।11।।

इस लक्ष्मी सूक्त का पाठ करने वाला भक्त श्री (लक्ष्मी), वर्चस्व (अमित तेज), आयु, आरोग्य, शोभा, धन, धान्य, पशु, बहुत पुत्र-पौत्रादि और सौ वर्ष की आयु प्राप्त करता है।।12।।

श्रीधनदा-स्तोत्रम्

शिवउवाच

अथातः सम् प्रवक्ष्यामि धनदा-स्तोत्र-मुत्तमम्।
यथोक्तम् सर्व-तन्त्रेषु इदानीम् तत् प्रका-शितम्।।
नमः सर्व-स्वरूपेण नमः कल्याण-दायिके।
महा-सम्पत्-प्रदे देवि धन-दायै नमोऽस्तु ते।।1।।

महा-भोग-प्रदे देवि महा-काम-प्रपू-रिते।
सुख-मोक्ष-प्रदे देवि धन-दायै नमोऽस्तु ते।।2।।

ब्रह्म-रूपे सदा-नन्दे सदानन्द-स्वरूपिणि।
द्रुत-सिद्धि-प्रदे देवि धन-दायै नमोऽस्तु ते।।3।।

उद्यत्-सूर्य-प्रकाशाभे उद्यदा-दित्य-मण्डले।
शिव-तत्त्व-प्रदे देवि धन-दायै नमोऽस्तु ते।।4।।

विष्णु-रूपे विश्वमते विश्व-पालन-कारिणि।
हा-सत्व-गुणा-क्रान्ते धन-दायै नमोऽस्तुते।।5।।

शिव-रूपे शिवानन्दे कारणा-नन्द-विग्रहे।
विश्व-संहार-रूपे च धन-दायै नमोऽस्तु ते।।6।।

पंच-तत्त्व-स्वरूपे च पंचाचार सदारते।
साधका-भीष्टदे देवि धनदायै नमोऽस्तु ते।।7।।

इदम् स्तोत्रम् मया प्रोक्तम् साधका-भीष्ट-दायकम्।
यः पठेत् पाठयेद्-वापि स लभेत् सकलम् फलम्।।8।।

त्रि-संध्यम् यः पठेन् नित्यम् स्तोत्र-मेतत् समाहितः।
स सिद्धिम् लभते शीघ्रम् नात्र कार्या विचारणा।।9।।

इदम् रहस्यम् परमम् स्तोत्रम् परम-दुर्लभम्।
गोप-नीयम् प्रयत्नेन स्वयोनि-रिव-पार्वती।।10।।

अप्रकाश्य-मिदम् देवि गोप-नीयम् परात्-परम्।
प्रपेठन्-नात्र सन्देहो धनवान् जायतेऽ-चिरात्।।11।।

श्रीधनदा स्तोत्रम् अम्बार्पण मस्तु

श्री धनदा स्तोत्रम्

अनुवाद

भगवान शिव बोले! अब मैं उत्तम धनदा स्तोत्र कहता हूँ। सभी तंत्र ग्रंथों में जैसा कहा गया है इस समय वैसा ही प्रकाशित कर रहा हूँ।

हे देवि! आप सभी स्वरूपों से प्रणम्य है। कल्याण देने वाली लक्ष्मी को नमस्कार है। उन महान् सम्पत्ति देनेवाली धनदा लक्ष्मी को नमस्कार है।।1।।

हे देवि! आप महान भोग प्रदान करनेवाली, महान कामनाओं को पूरा करने वाली, सुखदेनेवाली एवं मोक्षदेने वाली है। आप धनदा लक्ष्मी को नमस्कार है।।2।।

हे देवि! आप ब्रह्मरूपिणी, सदा आनंद देनेवाली, सदा आनन्द-स्वरूपिणी, तुरंत सिद्धि प्रदान करने वाली है। आप धनदा लक्ष्मी देवी को नमस्कार है।।3।।

आप उदीयमान सूर्य प्रकाश के समान आभावाली, आदित्य मण्डल सदृश कान्ति युक्ता, कल्याण तत्त्व प्रदान करने वाली हैं। हे धनदायिनी लक्ष्मी देवी! आपको नमस्कार है।।4।।

आप विष्णु स्वरूपा, वैश्विक विचार-बुद्धि वाली, विश्व का पालन करने वाली, महान सत्त्व गुणों से आवृत्त हैं। हे धनदा लक्ष्मी देवी! आपको नमस्कार है।।5।।

आप शिवस्वरूपा या कल्याणरूपा, शिवानन्दमयी, कारण-आनन्द-विग्रह धारण करनवाली, विश्व संहार-स्वरूपिणी हैं। हे धनदा लक्ष्मी देवी! आपको बार-बार नमस्कार है।।6।।

आप पंचायत रूपा, सदा पंच आचार रता, तथा साधकों को अभीष्ट देने वाली हैं। हे धनदा देवी आपको नमस्कार है।।7।।

साधकों को अभीष्ट फल देनेवाला यह स्तोत्र मेरे द्वारा कहा गया है। जो इसे पढ़ता है और पढ़ाता है वह सभी फलों को प्राप्त करता है।।8।।

जो इस स्तोत्र को सुसमाहित होकर त्रिकाल संध्या पाठ करता है वह शीघ्र ही सिद्धि प्राप्त करता है। इस कार्य में संशय का विचार नहीं करना चाहिए।।9।।

यह परम सिद्धि दायक परम-दुर्लभ स्तोत्र रहस्यमय है। हे पार्वति! इसे प्रयत्नपूर्वक स्वयोनि के समान गुप्त रखना चाहिए क्योंकि यह गोपनीय है।।10।।

यह परात्पर अप्रकाश्य एवं गोपनीय स्तोत्र है। इसमें संदेह नहीं कि इसे पढ़ने के बाद मानव चिरकाल के लिए धनवान हो जाता है।।11।।

श्रीमहालक्ष्मी-अष्टकम्

(इन्द्र-उवाच)

नमस्-तेऽस्तु महा-माये श्री-पीठे सुर-पूजिते।
शंख-चक्र-गदा-हस्ते महा-लक्ष्मि नमोऽस्तु ते।।1।।
नमस्ते गरुडा-रूढ़े कोला-सुर भयंकरि।
सर्व-पाप-हरे देवि महा-लक्ष्मि नमोऽस्तु ते।।2।।
सर्वज्ञे सर्व-वरदे सर्व-दुष्ट-भयंकरि।
सर्व-दु:ख हरे देवि नमोऽस्तुते महालक्ष्मि।।3।।
सिद्धि-बुद्धि-प्रदे देवि भुक्ति-मुक्ति-प्रदायिनी।
मंत्र-पूते सदा देवि महा-लक्ष्मि नमोऽस्तु ते।।4।।
आद्यन्त-रहिते देवि आद्य-शक्ति-महेश्वरि।
योगजे योग-संभूते महा-लक्ष्मि नमोऽस्तु ते।।5।।
स्थूल-सूक्ष्म-महा-रौद्रे महा-शक्ति महो-दरे।
महा-पाप हरे देवि महा-लक्ष्मि नमोऽस्तु ते।।6।।
पद्मा-सन-स्थिते देवि पर-ब्रह्म-स्वरूपिणि।
परमेशि जगन्-मातर्-महा-लक्ष्मि नमोऽस्तु ते।।7।।
श्वेताम्बर-धरे देवि नाना-लंकार-भूषिते।
जगत्-स्थिते जगन्-मातर महा लक्ष्मि नमोऽस्तु ते।।8।।
महा-लक्ष्म्यष्-टकम् स्तोत्रम् य: पठेद्-भक्तिमान्-नर:।
सर्व-सिद्धि-मवाप्-नोति राज्यम् प्राप् नोति सर्वदा।।9।।
एक-कालम् य: पठेन्-नित्यम् महा-शत्रु-विनाशनम्।
महा-लक्ष्मीर्-भवेन्-नित्यम् प्रसन्ना वरदा शुभा।।10।।

श्री महालक्ष्मी अष्टकम्

अम्बा-अर्पण मस्तु

श्रीमहालक्ष्मी-अष्टकम्

अनुवाद

इन्द्र बोले- श्रीपीठ पर स्थित और देवताओं से पूजित हे महामाया! तुम्हें नमस्कार है। हाथ में शंख, चक्र और गदा धारण करने वाली हे महालक्ष्मि! तुम्हें प्रणाम।।1।।

गरुड़ पर सवार हो कोलासुर को भय देने वाली और सभी पापों को हरण करने वाली हे महालक्ष्मि! तुम्हें नमस्कार है।।2।।

सब कुछ जाननेवाली, सबको सब प्रकार का वरदान देनेवाली, समस्त दुष्टों को भय देनेवाली, सबके हर प्रकार के दु:खों को हरनेवाली हे माते महालक्ष्मी! तुम्हें प्रणाम है।।3।।

सिद्धि, बुद्धि, भोग और मोक्ष प्रदान करने वाली, सदा मंत्र से पवित्र रहने वाली और करनेवाली हे देवी महालक्ष्मी! आपको नमस्कार है।।4।।

हे देवि! आप आदि-अंत से रहित हो। हे महेश्वरि! आप आदि-शक्ति हो। योग से प्रकट होनवाली और योग को प्रकट करनेवाली हे महालक्ष्मी! आपको प्रणाम।।5।।

हे देवि! आप स्थूल, सूक्ष्म एवं महा-रौद्र रूप धारण करने वाली, महान उदरवाली महान शक्ति हो। हे महापाप हरनेवाली महालक्ष्मी! आपको नमस्कार है।।6।।

हे देवि महालक्ष्मि! आप कमल के आसन पर स्थित रहनेवाली, परम-बह्म-स्वरूपिणी परमेश्वरी और जगत् की माता हो। आपको प्रणाम है।।7।।

हे देवि महालक्ष्मि! आप श्वेत वस्त्र धारण करनेवाली, नाना प्रकार के आभूषणों से सुसज्जित रहने वाली, सम्पूर्ण विश्व में व्याप्त रहनेवाली हो। आपको नमस्कार है।।8।।

जो मनुष्य भक्ति युक्त होकर इस महालक्ष्मी-अष्टक स्तोत्र का सदा पाठ करता है, वह सभी सिद्धियों और राज्य-सम्पत्ति को प्राप्त करता है।।9।।

जो रोज एक समय पाठ करता है उसके बड़े-बड़े पापों का नाश हो जाता है। जो दो समय पाठ करता है वह धन-धान्य से सम्पन्न होता है।।10।।

जो प्रतिदिन तीन समय पाठ करता है उसके महान शत्रुओं का नाश हो जाता है और उसके उपर महालक्ष्मी प्रसन्न होकर नित्य शुभ और उत्तम वरदान देती है।।11।।

लक्ष्मी प्राप्ति के कुछ मंत्र और जप-विधि

1. ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै नमः।
2. ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः।
3. ॐ श्रीं श्रियै नमः स्वाहा
4. ॐ श्रियै नमः।
5. ॐ श्रीं महालक्ष्म्यै नमः।
6. ॐ श्रीं ह्रीं ऐं महालक्ष्म्यै कमलधारिण्यै सिंहवाहिन्यै स्वाहा।
7. ॐ श्रीं धनदा लक्ष्म्यै नमः।

किसी मंत्र का जप रोज लाल या उजला या बेल या कमलगट्टा या स्फटिक अथवा रूद्राक्ष की माला पर 1 माला यानी 108 करना लाभकारी होगा। कम से कम 11 या 27 या 54 भी जप कर निष्ठापूर्वक कर सकते हैं।

ऋण (कर्ज) से मुक्त होने के कुछ प्रमुख मंत्र

पालनाय च तपसा विश्वामित्रेण पूजितः।
सदैव पार्वतीपुत्र ऋणनाशं करोतु मे।।
ऋण-रोगादि-दारिद्र्यम् ये चान्ये चापमृत्यवः।
भय-कलश-मनस-तापाः नश्यन्तु मम सर्वदा।।
एकाक्षरम् त्वेक-दन्त-मेकम ब्रह्म सनातनम्।
महाविघ्न हर देवं नमामि ऋणमुक्तये
ॐ गणेश ऋणम् छिन्धि वरेरण्यं हुं नमः फट्
अनृणा अस्मिनरणः पस्मिन् तृतीये लोके अनृणाः स्याम्।
ये देवयानाः पितृयाणाश्च लोकाः सर्वान् पथो अनृणा आ क्षियेम्।।

लक्ष्मी प्राप्ति के श्लोकात्मक मंत्र

कुबेर त्वम् धनाधीश गृहे ते कमला स्थिता।
ताम् देवीम् प्रेषयाशु त्वम् मद्-गृहे ते नमो नमः।।

ॐ राम-भद्र महेष्वास रघुवीर नृपोत्तम।
भोदशा-स्यान्त-कास्माकम्रक्षाम्देहिश्रियम्चते।।

वाराणस्या-मुत्तरे भागे सुमन्तुर् नाम वै द्विजः।
तस्य स्मरण-मात्रेण निर्धनो धनवान् भवेत्।।

ॐ दुर्गे स्मृता हरसि भीतिम-शेष-जन्तो स्वस्थैः
स्मृता मति-मतीव शुभाम् ददासि।
दारिद्र्य-दुःख-भय-हारिणि का त्वदन्या
सर्वोप-कार-करणाय सदार्द्र-चित्ता।।

सर्वाबाधा-विनिर्-मुक्तो धन-धान्य सुतान्वितः।
मनुष्यो मत्प्रसादेन भविष्यति न संशयः।।

अश्वदायी गोदायी धनदायी महाधने।
धनं मे जुष तां देवि सर्वान् कामाँश्च देहि मे।।

इनमें किसी भी मंत्र का श्रद्धा-भक्ति से अपने पूजा स्थान पर या दूकान प्रतिष्ठान में या घर में अथवा किसी देव मंदिर में 11, 21, 27, 54 या 108 बार रोज जप करें अथवा इस मंत्र का संपुट लगाकर किसी विद्वान पंडित से या स्वतः 1, 3, 7, 8, 11, 27 या 100 बार चंडी पाठ करावें इससे लक्ष्मीदेवी की कृपा होगी और ऋण से मुक्ति मिलेगी।